बहुव्यय तथा बहुपरिश्रमसाध्य सदुद्योग उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त करता हुआ शीघ्र सफल होगा।

हमारे इस कार्यके प्रारंभमें सबसे प्रथम हमें श्रीमती छोगीबाई (निवासस्थान मारवाड–भिमलपुर) की तरफ से १००) रु. रोककी सहायता मिली है रु. २१) शेट टोकरसी देवसी की तरफसे सहायता मिली है. इसलिये हम उन्हें अनेकशः धन्यवाद देनेके साथ २ उनके उत्साह और धर्मानुरागकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा करते हैं। ऐसे अवसरपर द्रव्यका इसप्रकार सदुपयोग कर उक्त बाईने और शेठने अवश्यही महत्त्वका कार्य किया है। अंतमे हम अपने दानवीर समस्त जैन बन्धुओंसे इस कार्यमें यथाशक्ति सहायताकी प्रार्थना कर प्रथम प्रयत्न होनेके कारण मनुष्यस्वभावानुसार इस पुस्तकमें रही हुई भूलोंके लिये क्षमा चाहते हुए इसके साद्यन्त अवलोकनका सादर अनुरोध करते हैं।

श्रीसंघका सेवक–

जैनग्रन्थोद्धारक मण्डल–तरफसे सुरजमलजी तातेड.

अथ

श्रीदादासाहेबकी पूजाका

विषयानुक्रम ।

इति विषयानुक्रम समाप्त ।

अथ श्रीदादासाहेबकी पूजा।

अथ पहली थापना स्थापन करके
आवाहनका श्लोक पढ़े।

सकलगुणगरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान्
शमदमयमजुष्टांश्चारुचारित्रनिष्ठान्।
निखिलजगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान्
मुनिपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त श्रीजिनकुशल श्री जिनचन्द्रसूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा॥ २॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा इति प्रतिष्ठापनम्॥ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरो अत्र मम संनिहितो भव वषट् इति संनिधीकरणम्॥ ३॥ अथ जलका कलश लेके स्नानकर्ता शुचि होके खड़ा रहे॥

अथ स्तुतिप्रारम्भः ।

दोहा–ईश्वर जग चिंतामणी, कर परमेष्ठीध्यान ।
गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥
सार्धमा मुनिपति प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट ।
मिथ्यामततमहरणको, भव्य दिखावन बाट ॥ २ ॥
सुस्थित सुप्रतिवद्ध गुरु, सूरि मंत्रको जाप ।
कोटि कियो जब ध्यान धर, कोटिकगच्छ सुथाप ३
दश पूर्वी श्रुतकेवली, भये वज्रधर स्वाम ।
तादिनतें गुरुगच्छको, वज्रशाख भयो नाम ॥ ४ ॥
चंद्रसूरि भये चंद्रसम, अतिही बुद्धिनिधान ।
चंद्रकुली सब जगतमें, पसरी बहु विज्ञान ॥ ५ ॥
वर्द्धमानके पाट पद, सूरि जिनेश्वर भाश ।
चैत्यवासिको जीतकर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥६॥
अणहिलपुर पाटणसभा, लोक मिले तहँ लक्ष ।
खरतर बिरुद सुधानिधि, दुर्लभ राजसमक्ष ॥ ७ ॥
अभयदेव सूरि भये, नवअंगटीकाकार ।
थंभण पारस प्रगट कर, कुष्ट मिटावनहार ॥ ८ ॥

श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक ।
मति बोधे श्रावक बहुत, ताके पट्टविशेष ॥ ९ ॥
डुंबड़ श्रावक बावड़ी, अट्ठारे हज्जार ।
जैन दयाधर्मी किये, वरते जैजैकार ॥ १० ॥
दादानाम विख्यात जस, सुर नर सेवक जास ।
दत्तसूरि गुरु पूजना, आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥
दिल्लीमें पतसाहने, हुकम उठाया शीस ।
मणिधारी जिनचंद्र गुरु, पूजो बिसवावीस ॥ १२ ॥
ताके पट्ट परंपरा, श्रीजिनकुशल सूरिंद ।
अकबरको परचा दिया, दादा श्रीजिनचंद ॥१३॥
ऐसे दादाचारको, पूजो चित्त लगाय ।
जल चंदन कुसुमादि कर, ध्वज सौगंध चढ़ाय॥१४॥
चाल दादा चिरंजीवो ए देशी ॥
गुरुराजतणी कर पूजन भवि सुखकर मिलसी
...छे घणी ए आंकणी गुरु दत्तसूरिंद जग सुख-
...री गुरु सेवकने सानिधकारी गुरुचरण कमलनी
...हारी गु० १ संवत इग्यारे व.र शशी बत्तीसे

जगमें गाजे भये दादा चौथे सुख काजे गु० ११
जिन चांद उगायो उजियालो अम्मावसकी पूनमवालो सब श्रावक मिल पूजन चालो गु० १२
जिन अकबरको परचा दीना काजीकी टोपी वश कीना बकरीका भेद कह्या तीना गु० १३ गंधोदक सुरभि कलश भरी प्रक्षालन सद्गुरु चरण परी या पूजन कवि ऋद्धिसार करी गु० १४

श्लोकः।

सुरनदीजलनिर्मलधारकैः प्रबलदुष्कृतदावनिवारकैः। सकलमङ्गलवाञ्छितदायकौ कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थलाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकब्बरअसुरत्राणमतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय जलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ १ ॥

नाम जपत जाप करत नांह चूं। फेर में पड़ूंगी नांह छोड़ दीन फूं बो० ८ दो० करोगे निहाल आप पाव पलकनूं रामऋद्धिसार दास चरण छांह लूं च० १० दो० श्लोक—मलयचन्दनकेशरवारिणा निखिलजाड्यरुजातपहारिणा। सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त केशरचन्दनं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ २ ॥

दोहा—चंपा चमेली मालती, मरुवा अरु मुचकुंद।
जो चाढ़े गुरुचरणपर, नित घर होय आनंद ॥१॥

नींद तो गई वादीला मारी ए चाल—राग मांड। गुरु परतिख सुरतरुरूप सुगुरुसम दूजो तो नहीं। दूजो तो नहीं रे सुमति जन दूजो तो नहीं। गुरु परतिख सुरतरुरूप सुगुरुने पूजो तो सही। ए आंकणी। चितोड नगरी वज्रथंभमें विद्या पोथी रहीरे सु० दि० हेजी मंत्र जंत्र विद्यासे पूरी गुरु निजहाथ ग्रही गु० गुरुपर० १ पुरउज्जयिनी महाकालके मंदिर थंभ कहीरे सुम० हेजी सिद्धसेन

अथ द्वितीय केशरचंदनपूजाप्रारंभः ।
दोहा—केशर चंदन मृगमदा, कर घनसार मिलाप।
परचा जिनदत्तसूरिका, पूज्यां ट्टे पाप ॥ १ ॥
चाल वीण बाजकी
दीनके दयाल राज सार २ तूं ।
आंकणी आये । भरुअछ नग्र धाम धूम २ धूं
बाजते निशान ठौर हर्ष रंग हूं ह० दो० १
मुसलमान मुगलपूत फौज मौजमूं । फौत मोत
होगया हायकारसूं हा० दो० २ सब्र विप्र देख
आप हुक्म दीन यूं । लावो मेरे पास आस जीव-
दान द्रूं जी० ३ दो० मृतक पूत मंत्रसे उठाय
दीन तूं देखके अचंभ रंग दास खासकूं दा० ४दो०
करत सेव भावपूर तुरकराज जूं । छोड़के अभक्ष्य
खान हाजरी भरूं हा० ५ दो० बीज खोजके पडी
प्रतिक्रमणके मूं । हाथसे उठाय पात्र ढांक दीन
छूं ढ० ६ दो० दामनी अमोल बोल सिद्धराज
तूं । देउँ वर दान छोड़ बंद कीन क्यूं बं० ७ दत्त

नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर में पडूंगी नांह छोड़ दीन फूं बो० ८ दो० करोगे निहाल आप पाव पलक्कूं रामऋद्धिसार दास चरण छांह लूं च० १० दो० श्लोक–मलयचन्दनकेशरवारिणा निखिलजाड्यरुजातपहारिणा । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त केशरचन्दनं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ २ ॥

दोहा–चंपा चमेली मालती, मरुवा अरु मुचकुंद । जो चाढ़े गुरुचरणपर, नित घर होय आनंद ॥१॥ नींद तो गई वादीला मारी ए चाल–राग मांडागुरु परतिख सुरतरुरूप सुगुरुसम दूजो तो नहीं । दूजो तो नहीं रे सुमति जन दूजो तो नहीं । गुरु परतिख सुरतरुरूप सुगुरुने पूजो तो सही । ए आंकणी । चितोड नगरी वज्रथंभमें विद्या पोथी रहींरे सु० दि० हेजी मंत्र जंत्र विद्यासे पूरी गुरु निजहाथ ग्रही गु० गुरुपर० १ पुरउज्जयिनी महाकालके मंदिर थंभ कहीरे सुम० हेजी [illegible]

श्रावक ऐसो नियम चित्त ठाने । युग प्रधान इस युगमें कोई देखूं जन्म प्रमाणे । गु० अं०१ । कर उपवास तीन दिन बीते प्रगटी अंबा ज्ञाने गु० । प्रगट होय करमें लिख दीना सुवरन अक्षर दाने । गु० अं२ । या गुणसंयुत अक्षर बांचे ताको युगवर जाने ॥ गु० ॥ अंबड मुलक २ में फिरता सूरि सकल पतवाने ॥ गु० ३ ॥ आया पास तुम्हारे सद्गुरु कर पसार दिखलाने ॥ गु० ॥ वासक्षेप उनऊपर डाला चेला वांच सुनाने ॥ गु० ॥ अं ४ ॥ सर्वदेव हैं दास जिनोंके मरुधर कल्प प्रमाणे ॥ युगप्रधान जिनदत्त सूरीश्वन अंबड शीश झुकाने ॥ गु० ५ ॥ उद्योतन सूरीरे निज हथ चोरासी गछ ठाने । सो सब तुम्हरी सेवा सारे चौरासी गछ माने ॥ गु० ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमको न पूजे सो नहीं तत्त्व पिछाने । भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्त्तन कीनी ग्रंथ प्रमाणे । गु० ७ ॥ युगप्रधान परि की एं गिंडिका गणधर

पदवृत्ति म्याने । कहे रामऋद्धिशार गुरुको पूजा धूप कराने ॥ गु ०८ ॥

श्लोक–अगरचन्दनधूपदशाङ्गजैः प्रसरिताखिलदिग्धु सुधूपकैः । सकल मं०४ ॐ ह्रीं श्रीं पर०धूपं निर्विपामि ते स्वाहा ॥ ४ ॥

दोहा–दीप पूजकर सुगण नर, नित २ मंगल होत। उजियाला जगमें जुगत, रहे अखंडत जोत ॥ १ ॥

चाल ख्यालकी ।

पूजन कीज्योजी नर नारी गुरु महाराजका हो पू० । सिंधुदेशमें पंच नदीपर साधे पांचो पीर । लेई ऊपर पुरुष तिराये ऐसे गुरू सधीर पू० १। प्रगट होयके पांच पीरने सात दिया वरदान । सिंधु देशमें खरतर श्रावक होवेगा धनवान पू० २।सिंधुदेश मुलतान नगरमें बड़ा महोत्सव देख । अंबड़ और गच्छका श्रावक गुरुसे कीना द्वेष पू० ३ । अणहिलपुर पत्तनमें आवो तो मैं जानूं सच्चा । बड़े महोत्सव आवेंगे तू निर्धन होगा कच्चा पू० ४॥ पत्तनवीच

पधारे दादा सनमुख निर्धन आया । गुरु बतलाया क्योंरे अंवड अहंकार फल पाया पू०५।मनमें कपट किया अंवड़ने खरतरमहिमा धारी । जहर दिया उन अशन पानमें गुरु विधि जानी सारी पू० ६। भणशाली मुखवर श्रावकसे निर्विष मुद्री मँगाई । जहर उतारा तव लोकोंमें अंवड़ निंदा पाई पू०७। मरके व्यंतर हुआ वो अंवड़ रजोहरण हर लीना। भणसाली व्यंतर वचनोंसे गोत्र उतारा कीना पू०८। सज्ज होय गुरु ओघा लेके गोत्र बचाया सारा । ऋद्धिसार महिमा सद्‌गुरुकी दीपकका उजियारा पू० ९ ॥ श्लोक–अतिसुदीप्तिमयैः खलु दीपकैर्विमलकाञ्चनभाजनसंस्थितैः । सकल० ॐ ह्रीं पर० दीपं निर्व्विपामि ते स्वाहा ५ ॥

दोहा–अक्षतपूजा गुरुतणी, करो महाशय रंग ।
क्षती न होवे अंगमें, जीते रणमें जंग ॥ १ ॥

राग आसावरी–अवधूत सो योगी गुरु मेरा ए चाल।
रतन अमोलक पाया सु गुरु शम रतन अमोलक पायो ।

धर्म दिपायो । ऋद्धिसारपर किरपा कीनी सांचा इल्म बतलायो ॥ सु० १० ॥ ७ ॥

श्लोक-सरलतन्दुलकैरतिनिर्मलैः प्रवरमौक्तिकपुञ्जवदुज्वलैः । सकल० ॐ ह्रीं श्रीं प० अक्षतान् निर्व्विपामि ते स्वाहा ॥ ६ ॥

दोहा-नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव। गुरुगुण अगणित कुण गिणे, गुरु भवतारण नाव ॥ १ ॥

राग कल्याण-तेरी पूजा बनी है रसमें ए चाल। हो गुरु किया असुरको वशमें ए आंकणी । बड़ नगरीमें आप पधारे सांभेला धसमसमें । ब्राह्मण लोक बड़े अभिमानी मिलकर आया सुसमें। हे गु० १।महिमा देख सकया नहीं गुरुकी भरे मिथ्यात्वी गुसमें । मृतक गऊ जिनमंदिर आगे रखदी सनमुख चसमें॥ हो गु० ॥ २ ॥ श्रावक देख भये आकुलता कहे गुरुसे कसमें ।

चा०५ ए आंकणी। आनंदपुर पट्टनको राजा गुरु शोभा सुन पावत हे रे ॥ चा० भेजा निज परधान बुलाने नृप अरदास सुनावत हे रे ॥ चा० लाभ जान गुरु नगर पधारे भूपति आय बधावत हे रे ॥ चा० ॥ राजकुमरको कुष्ठ मिटायो अचरज तुरत दिखावत हे रे ॥ चा०२॥ दश हजार कुटुंब संग नृपको श्रावकधर्म धरावत हे रे ॥ चा० ३ ॥ दयामूल आज्ञा जिनवरकी बारा व्रत उचरावत हे रे॥ चा० ॥ ऐसे चार राज समकित धर खरतर संघ बनावत है रे ॥ चा०४॥ कुष्ठ जलंधर क्षयी भगंदर कइयक लोक जिवावत हे रे ॥ चा० ॥ ब्राह्मण क्षत्री अरु माहेश्वर ओमवंश पसरावत हे रे ॥ चा० ५ ॥ तीम हजार एक लख श्रावक महिमा अधिक रचावत हे रे ॥ चा०॥ कहत रामऋद्धिसार गुरुको फलपूजा फल पावत हे रे ॥ चा०६ ॥

शिणगार सहेल्यां श्रीसद्गुरुके द्वार खरी रे ध० । अपछर रूप सुतन सुक लीनी ठम २ पग झणकार करीरे।ध० १। गावत मंगल देत प्रदक्षिणा धन २ आनंद आज घरी रे। ध०। निर्धनको लखमी वकसावत पुत्र विना जाके पुत्र करीरे २। जो जो परतिप परचा देख्या सुनो भविक दिलबीच धरीरे॥ ध०।फतेमल्ल भड़गतिया श्रावक पहली शंका जोरे करीरे ध० ३ । परतिख देखूं तब मैं जानूं प्रगट्यां ततखिण तरण तरीरे ध०। पुष्पमाल शिर केशर टीका अधर श्वेत पोशाक करीरे ध० ४। मांग २ वर बोले वाणी फरक बतावो गुरु मेवझरीरे ध० फरक उगायो दोय लाख पर तेरी महिमा नित्त हरीरे ध० ५। गैनचंद गोलेछाको तैं परतिख दीना दरस फरीरे ध०।विक्रमपुरमें थंभ तुम्हारा चित्र करावत सुरसुंदरीरे ध० ६ । थानमल्ल लूण्यांपर किरपा

लखमी लीला सहज वरीरे । लखमो पतिगडदू की साहिब हुंडीको भुगतान करीरे ध० ७। जो उपकार कन्यों तैं मेरा दीनी सनमुख अमृतझरीरे ध०।तेरी कृपासे सिद्धी पाई जागे जस अरु भाग भरीरे ध० ८। भूखा भोजन तिसिया पानी भरत हाजरी देव परीरे ध०। विखम वखत पर सहाय हमारे ऋद्धिसारकी गरज सरीरे ध० ९

श्लोक-मृदुमधुरध्वनिकिङ्किणीनादकैर्ध्वजविचित्रितविस्तृतवासकैः । सकल० शिखरोपरि ध्वजाम् आरोपयामि स्वाहा ॥

दोहा--भट्टारक पदवी मिली, जीते वादीवृंद । कंठ विराजत सरस्वती,जगमें श्रीजिनचंद ॥

राग आसावरी-अथवा धनाश्री । पूजन जग-सुखकारी सु गुरु तेरी पूजा० । तेरे चरणकमल बलिहारी सु०।साह सलेमी दिल्लीको बादस्या सुन-

गुणपूरे कुशलनिधान उदारी सु०८। या पूजन करतां सुख आनंद अन धन लखमी सारी । कहत राम ऋद्धिसार गुरुकी जय२ शब्द उचारी सु०९। इति श्रीसमस्तदादागुरुपूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती लिख्यते ॥

जय जय गुरु देवा आरति मंगल मेवा आनंद सुख लेवा।ज०।आंकणी।इक व्रत दुय व्रत तीन चार-व्रत पंच व्रतमें सोहे गु०। जगत जीव निसतारण सुर नर मन मंहे ज० १। दुःख द्रोह सब हर कर सदगुरु राजन मति बोधे । सुत लखमी वर देकर श्रावककुल सोधे ज०२। विद्या पुस्तक धर कर सदगुरु मुगलपूत तारे । वस कर जोगन चौसठ पांच पीर सारे ज० ३। बीज पड़ंती वारी सदगुरु समंदर जहाज तारी । वीर किये बस बावन प्रगटे अवतारी ज०४। जिनदत्त जिन चंद कुशल सूरि

गुरु स्वरूपगन्द्र भारा। चेतन्य मच्छु पूजे मन वो रत तागा [illegible] इष्ट आरती कर्यनिवारण [illegible] । जो मागे सो पावे जगमें जस लीजे [illegible] । विक्रमपुरमें भगत तुम्हारो मंत्र कल्याणगी । [illegible] मनवांछित फल पाया [illegible] ॥

दादाजीमहाराज गत-लहरी ।

माया [illegible] दूर हो गो । [illegible] चरणधर [illegible] । जिया [illegible] मिलकर [illegible] चोक [illegible] चवल [illegible] गुरुमहिमागेत [illegible] गुरु [illegible] पुलाइ (जिया रा) (माया) [illegible]

भरके कंचोलीः मांहे मृगमद कुंकुम घोलीः गुरुपूजा रचो भर झोली. (जिया हो.) (भाया.) ४ श्रीजिनहर्षसूरि सरताजाः बाजे जगजशना बाजाः सत्यरत्न करे शुभकाजा(जिया हो.): (भाया): ५ इति स्तवन.

राग—केरवों.

कुशल सुरिंद गुरुपूजो भवि हितसूं. (कुश०) केशर चंदन कपूर अरगजाः भाव धरी करो पूजा चित्तसूं। (कु०) १। मोगरा लाल गुलाब मालतीः मनसुध माल करे भवि रुचिसूंः (कु०) २। अशरणशरण परम गुरु सेवोः धर्मध्यान चंगे आतमरुचिसूंः (कु०) ३। सेवकजन प्रतिपाल जगतगुरुः आशा पूरे गुरु घणुं दत्तसूं (कु०) ४ ध्यान सुधारे ज्ञान वधारेः रूप रंग देवे चितहित मतसूं. (कु०) ५। कुशलसूरींद गुरु

सानिधकारीः परतिख परचा पूरै सतसूं:(कु०) ६। श्रीजिन हर्ष सदा सुविलासीः सत्यरतन सुख एही छतसुं. (कु०) ॥ १ ॥

राग–ताल. ठुमरी.

छत्रपती थारे पायनमें जी सुर नर सारे सेवें ज्योति थारी जग जागती जी । दुनियामें परखित देव ॥१॥ हूं तो मोहि रहो जी थ्हांरा राज. दादेरे दरबार. (हूं०) केशर अंबर केवड़ो जीः कस्तूरी करपूर । चंपो चंदन रायचंवेलीः भक्ति करुं भरपूर॥(हूं०) २। पांगुलियांने पाव समापै आंधलियाने आंख । रूपहीनने रूप देवे दादोः पंखहीनने पांख । (हूं०) ३। चंद पटो धर साहिबोजीः श्रीजिनकुशल सूरींद।आठ पहर थाने उलगे जीः रंग घणें राजिंद। (हूं०) ।४। इति.

नेमश्यामसे कहियो मोरीः

गुरुपूजा रची रे सुज्ञानीः भली हिये भक्ति भरानी । (गुरु०) श्रीजिनकुशल सूरीश्वर साहिबः खरतरगच्छराजानी । देश देशमें थानक गुरुकाः शोभा जग पहिंचानी. सदा रवितेज समानीः (गु.) १। केशर चंदन मृगमद भेलीः चरणांनी पूजा रचानीः धूप दीपावली आगल ढोवीः बहुविध पुष्प चढ़ानी । भला फल भेट धरांनी० (गु०) २। वाटघाटमें परचा पूरकः हाजर होत सहानी। श्रीजिन सौभाग्य सूरिके साहिबः वांछितकाज करानी । सदा गुरु महिर लखानीः (गुरु):३ः इति पदम्.

राग–प्रभाती.

कैसे कैसे अवसरमें गुरु राखी लाज हमारी। (कैसे०) मोको सबल भरोस तिहाराः चंदसूरि पटधारी॥(कै०) १।तुम विन और न कोई मेरेः

याजगमें हीनकारी । मेरा जीवन हाथ तुम्हारे देखो आप विचारी। (के०) २। आगे जो कछु बैर हमारी: चित्त दूर निवारी। अबकी बिरियां भूल मति जावो, सद्गुरुपद उदकारी। (के०) ३॥ अबके आप लाज कुशलकी [illegible] गुरु उपकारी। मोर कुशलसूरिंद गुरु [illegible] (के०) ४ ॥ इति पदम ॥

राग-रेखता

कुशलगुरु देखके दरसन, मेरा दिल होत है परसन । जगतमें यासमा कोई, न देखा नयनभर जोई॥१ । विरुद भूमंडले छाजे परसता पाप सहु भाजे,पूजतां संपदा पावे,अचिंती लक्ष्मी घर आवे॥ २॥ इके मुख गुण कहूं केता, मुझे विज्ञान नहि एता, लालचंदकी अरज सुन लीजे चरणकी शरण मोहिं दीजे ॥ ३ ॥ इति पदम ॥

अथ श्रीअजितप्रभुस्तुतिप्रारम्भः

(मालिनी छन्दः ।)

सकलसुखसमृद्धिर्यस्य पादारविन्दे,
विलसति गुणरक्ता भक्तराजीव नित्यम् ।
त्रिभुवनजनमान्यः शान्तमुद्राभिरामः,
स जयति जिनराजस्तुङ्गतारङ्गतीर्थे ॥ १ ॥
प्रभवति किल भव्यो यस्य निर्वर्णनेन,
व्यपगतदुरितौघः प्राप्तमोदप्रपञ्चः ।
निजबलजितरागद्वेषविद्वेषिवर्गं,
तमजितवरगोत्रं तीर्थनाथं नमामि ॥ २ ॥
नरपतिजितशत्रोर्वंशरत्नाकरेन्दुः,
सुरपतियतिमुख्यैर्भक्तिदक्षैः समर्च्यः ।
दिनपतिरिव लोकेऽपास्तमोहान्धकारो,
जिनपतिरजितेशः पातु मां पुण्यमूर्तिः॥३॥

अथ श्रीसंभवजिनस्तुतिप्रारम्भः ॥ ३॥

(स्रग्धरा छन्दः ।)

यद्भक्त्यासक्तचित्ताः प्रचुरतरभवभ्रान्तिमुक्ता मनु

प्याः, संजाताः साधुभावोल्लसितनिजगुणान्वेषिणः
सद्य एव । स श्रीमान् संभवेशः प्रशमरससमयो
विश्वविश्वोपकर्ता, सद्वर्ता दिव्यदीप्तिः परमपदकृते
सेव्यतां भव्यलोकाः ॥१॥शुक्लध्यानोदकेनोज्ज्वल-
मतिशयतस्वच्छभावाद्भुतेन, स्वस्मादादृत्य वृत्तं
शिवपदनिगमे कर्मपङ्कप्रपञ्चम् । नीरन्ध्रं दूरयित्वा
प्रकृतिमुपगतो निर्विकल्पस्वरूपः, सेव्यस्तार्क्ष्य-
ध्वजोऽसौ जगति जिनपतिर्वीतरागः सदैव॥२॥वा-
र्घौ विद्योतिरत्नप्रकर इव परिभ्राजते सर्वकाले,
यस्मिन्निःशेषदोषव्यपगमविशदे श्रीजितारेस्तनूजे।
दुष्प्रापो दुष्टसत्त्वैः स्फुटगुणनिकरः शुद्धबुद्धिक्ष-
मादिः कल्याणश्रीनिवासः स भवति वदताभ्यर्च-
नीयो न केषाम् ॥ ३ ॥

अथ श्रीअभिनन्दनस्तुतिप्रारम्भः॥४॥

(द्रुतविलम्बितं छन्दः ।)

विशदशारदसोमसमाननः,

कमलकोमलचारुविलोचनः ।
शुचिगुणः सुतरामभिनन्दनो,
जयतु निर्मलताश्चितभूवनः ॥ १ ॥
जगति कान्तहरीश्वरलाञ्छित-
क्रमसरोरुह भूरिकृपानिधे ।
मम समीहितसिद्धिविधायकं,
त्वदपरं कमपीह न तर्कये ॥ २ ॥
प्रवरसंवर संवरभूपते-
स्तनय नीतिविचक्षण ते पदम् ।
शरणमस्तु जिनेश निरन्तरं,
रुचिरभक्तियुक्तिभृतो मम ॥ ३ ॥

अथ सुमतिजिनस्तुतिप्रारम्भः ॥ ५ ॥

(उपेन्द्रवज्रा छन्दः ।)

सुवर्णवर्णो हरिणा सवर्णो,
मनोवने मे सुमतिर्बलीयान् ।
गतस्ततो दुष्टकुदृष्टिराग-
द्विपेन्द्र नैव स्थितिरत्र कार्या ॥ १ ॥

जिनेश्वरो मेघनरेन्द्रसूनु-
र्घनोपमो गर्जति मानसे मे ।
अहो गुरुद्वेषहुताशनत्वा-
मसौ शमं नेष्यति सद्य एव ॥ २ ॥
इतः सुदूरं व्रज दुष्टबुद्धे,
समं दुरात्मीयपरिच्छदेन ।
सुबुद्धिभर्ता सुमतिर्जिनेशो,
मनोरमः स्वान्तमितोमदीयम् ॥ ३ ॥

अथ श्रीपद्मप्रभजिनस्तुतिप्रारम्भः ॥६॥

(भुजङ्गप्रयातं छन्दः ।)

उदारप्रभामण्डलेभासमानः,
कृतात्यन्तदुर्दान्तदोषापमानः ।
सुसीमाङ्गजः श्रीपतिर्देवदेवः,
सदा मे मुदाभ्यर्चनीयस्त्वमेव ॥ १ ॥
यदीयं मनःपङ्कजं नित्यमेव,
त्वयालंकृतं ध्येयरूपेण देव ।
प्रधानस्वरूपं तमेवातिपुण्यं,
जगन्नाथ जानामि लोके सुधन्यम्

अथ श्रीचन्द्रप्रभजिनस्तुतिः ॥८॥

(वंशस्थं छन्दः ।)

अनन्तकान्तिप्रकरेण चारुणा,
कलाधिपेनाश्रितमात्मसाम्यतः ।
जिनेन्द्र चन्द्रप्रभदेवमुत्तमं,
भवन्तमेवात्महितं विभावये ॥ १ ॥
उदारचारित्रनिधे जगत्प्रभो,
तवाननम्भोजविलोकनेन मे ।
व्यथा समस्तास्तमितोदितं सुखं,
यथा तमिस्रा दिनमर्कतेजसा ॥ २ ॥
सदैव संसेवनतत्परे जने,
भवन्ति सर्वेऽपि सुराः सुदृष्टयः ।
समग्रलोके समचित्तवृत्तिना,
त्वयैव संजातमतो नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

अथ श्रीसुविधिजिनस्तुतिप्रारम्भः ।९।

(वसन्ततिलका छन्दः ।)

विश्वाभिवन्द्य मकराङ्कितपादपद्म,

सुग्रीवजात जिनपुङ्गव शान्तिसद्म ।
भव्यात्मतारण परोत्तमयानपात्र,
मां तारयस्व भववारिनिधेर्विरूपात् ॥ १॥
निःशेषदोषविगमोद्भवमोक्षमार्गे
भव्याः श्रयन्ति भवदाश्रयतो मुनीन्द्र।
संसेवितः सुरमणिर्बहुधा जनानां,
किं नाम नो भवति कामितसिद्धिकारी॥२॥
विज्ञं कृपारसनिधिं सुविधे स्वयंभू-
र्मत्वा भवन्तमिति विज्ञपयामि तावत्।
देवाधिदेव तव दर्शनवल्लभोऽहं,
शश्वद्भवामि भुवनेश तथा विधेहि ॥ ३ ॥

अथ श्रीशीतलजिनस्तुतिप्रारम्भः १०

(शार्दूलविक्रीडितं छन्दः ।)

कल्याणाङ्कुरवर्धने जलधरं सर्वाङ्गसंपत्करं,
विश्वव्यापियशःकलापकलितं कैवल्यलीलाश्रितम्।
नन्दाकुक्षिसमुद्भवं दृढरथक्षोणीपतेर्नन्दनं,

श्रीमत्सुरतबन्दिरे जिनवरं वन्दे प्रभुं शीतलम् ॥१॥
विश्वज्ञानविशुद्धसिद्धिपदवीहेतुप्रबोधं दध-
द्भव्यानां वरभक्तिरक्तमनसां चेतः समुल्लासयन् ।
नित्यानन्दमयः प्रसिद्धसमयः सद्भूतसौख्याश्रयो,
दुष्टानिष्टतमःप्रणाशतरणिर्जीयाज्जिनःशीतलः॥२॥
सद्भक्त्या त्रिदशेश्वरैः कृतनुतिर्भास्वद्गुणालंकृतिः,
सत्कल्याणसमद्युतिः शुभमतिःकल्याणकृत्संगतिः।
श्रीवत्साङ्कसमन्वितस्त्रिभुवनत्राणे गृहीतव्रतो,
भूयाद्भक्तिमतां सदैष वरदः श्रीशीतलस्तीर्थकृत्॥३॥

अथ श्रीश्रेयांसजिनस्तुति-प्रारम्भः ॥ ११ ॥

(हरिणी छन्दः ।)

चिरपरिचिता गाढव्याप्ता सुबुद्धिपराङ्मुखी,
निजबलपरिस्फूर्त्योदग्रा समग्रतया मम ।

व्यपगतवती दूरं दुष्टा स्वनिष्टकुदृष्टिता,
अपचितसहाः सद्यो भूत्वा यदीयसुदृष्टितः॥ १॥
निरुपमसुखश्रेणीहेतुर्निराकृतदुर्दशा,
शुचितरगुणग्रामावासा निसर्गमहोज्ज्वला॥
हृदयकमले प्रादुर्भूता सुतत्त्वरुचिर्मम,
विदलितभवभ्रान्तिर्यस्याप्यजस्रमनुस्मृतेः॥ २॥
उपकृतिमतिर्दीन-दक्षो निरस्तजगव्द्यथः,
समुचितकृतिर्विज्ञानांशुप्रकाशितसत्पथः,
नृपगणगुरोर्विष्णोर्वंशे प्रभाकरसंनिभः।
स भवतु मम श्रेयांसो नः प्रबोधसमृद्धये॥ ३॥

अथ श्रीवासुपूज्यजिनस्तुति-
प्रारम्भः॥ १२॥

(रथोद्धता छन्दः।)

पूर्णचन्द्रकमनीयदीधिति-
भ्राजमानमुखमद्भुतश्रियम्।
शान्तदृष्टिमभिरामचेष्टितं,
शिष्टजन्तुपरिवेष्टितं परम्॥ १॥

नष्टदुष्टमतिभिर्यमीश्वरं,
संस्मरद्भिरिह भूरिभिर्नृभिः ।
क्षीणमोहसमयादनन्तरा,
प्रापि सत्यपरमात्मरूपता ॥ २ ॥
पार्थिवेशवसुपूज्यवेश्मनि,
प्राप्तपुण्यजनुषं जगत्प्रभुम् ।
वासुपूज्यपरमेष्ठिनं सदा,
के स्मरन्ति न हितं विपश्चितः ॥ ३ ॥
(त्रिभिः संटङ्कः ।)

अथ श्रीविमलजिनस्तुति-प्रारम्भः ॥१३॥

(मन्दाक्रान्ता छन्दः ।)

संसारेऽस्मिन्महति महिमामेयमानन्दिरूपं,
त्वां सर्वज्ञं सकलसुकृतिश्रेणिसंसेव्यमानम् ।
दृष्ट्वा सम्यग्विमलसदसज्ज्ञानधाम प्रधानं
संप्राप्तोऽहं प्रशमसुखदां संभृतानन्दवीचिम्॥१॥

ये तु स्वामिन् कुमतिपिहितस्फारसद्बोधमूढाः
संस्थाकारां प्रतिकृतिमपि प्रेक्ष्य ते विश्वपूज्याम्।
द्वेषोद्भूतैः कलुषितमनोवृत्तयः स्युः प्रकामं
मन्ये तेषां गतशुभदृशां का गतिर्भाविनीति॥२॥
श्यामास्येनो प्रतिदिनमनुस्मृत्य विज्ञानिवाक्यं
हित्वानार्यं कुमतिवचनं ये भुवि प्राणभाजः।
पूर्णानन्दोल्लसितहृदयास्त्वां समागत्य यान्ति.
श्लाघ्याचारः प्रकृतिसुभगा मां-न-न्यास्तण ३

अथ श्री अनन्तजिनस्तुति-
प्रारम्भः ॥ १४ ॥

(स्रग्विणी [illegible])

यस्य भव्यात्मना दिव्यचैतन्य
सर्वदानन्दचिन्तामणि [illegible]
यान्ति दूरं स्वनस्तस्य दुःखपदः
विश्वविज्ञानवित् सेव्यताम्

यस्तु सर्वज्ञरूपं स्वरूपस्थितं,
वीक्ष्य सद्भावतः सिंहसेनात्मजम् ।
अद्भुतामोदसंदोहसंपूरितो,
मन्यते धन्यमात्मीयनेत्रद्वयम् ॥ २ ॥
सोऽपवर्गानुगामिस्वभावोज्ज्वलां,
व्यूढमिथ्यात्वविद्रावणे तत्पराम् ।
बन्धुरात्मानुभूतिप्रकाशोर्यतां,
शुद्धसम्यक्त्वसंपत्तिमालम्बते ॥ ३ ॥

अथ श्रीधर्मनाथजिनस्तुति-प्रारम्भः ॥ १५ ॥

(कामक्रीडा छन्दः ।)

भास्वज्ज्ञानं शुद्धात्मानं धर्मेशानं सद्ध्यानं,
शक्त्या युक्तं दोषोन्मुक्तं तत्त्वासक्तं सद्भक्तम् ।
शश्वच्छान्तं कीर्त्या कान्तं ध्वस्तध्वान्तं विश्रामं,
क्षिप्तावेशं सत्यादेशं श्रीधर्मेशं वन्दध्वम् ॥ १ ॥

निःशेषार्थप्रादुष्कर्ता सिद्धेर्भर्ता संधर्ता,
दुर्भावानां दूरे हर्ता दीनोद्धर्ता संस्मर्ता ।
सद्भक्तेभ्यो मुक्तेर्दाता विश्वत्राता निर्माता,
स्तुत्यो भक्त्या वाचोयुक्त्या चेतोवृत्त्या ध्येयात्मा ॥
सम्यग्दृग्भिः साक्षाद्दृष्टो मोहास्पृष्टो नाकृष्टः,
स्रोतोग्रामैः संपज्ज्येष्ठः साधुश्रेष्ठः सत्प्रेष्ठः ।
श्रद्धायुक्तस्वान्तैर्जुष्टो नित्यं तुष्टो निर्दुष्ट-
स्त्याज्यो नैव श्रीवज्राङ्को नष्टातङ्को निःशङ्कः ॥३॥

अथ श्रीशान्तिनाथजिन-स्तुतिप्रारम्भः ॥ १६ ॥

(द्रुतविलम्बितं छन्दः ।)
विपुलनिर्मलकीर्तिभरान्वितो,
जयति निर्जरनाथनमस्कृतः ।
लघुविनिर्जितमोहधराधिपो-
जगति यः प्रभुशान्तिजिनाधिप ॥ १ ॥

विहितशान्तसुधारसमज्जनं,
निखिलदुर्जयदोषविवर्जितम् ।
परमपुण्यवतां भजनीयतां,
गतमनन्तगुणैः सहितं सताम् ॥ २ ॥
तमचिरात्मजमीशमधीश्वरं,
भविकपद्मविबोधदिनेश्वरम् ।
महिमधाम भजामि जगत्त्रये,
वरमनुत्तरसिद्धिसमृद्धये ॥ ३ ॥

अथ श्रीकुन्थुनाथजिनस्तुतिः।

गीतपद्धतिश्छन्दः ।

जय जय कुन्थुजिनोत्तम सत्तमतत्त्वनिधान,
धर्मिजनोज्ज्वलमानसमानसहंससमान ।
ज्ञानाच्छादकमुख्यमहोद्धतकर्मविमुक्त,
विषमविषयपरिभोगविरक्त शुभाशययुक्त ॥१॥
जय जय विश्वजनीन मुनिव्रजमान्य विशुद्ध,
चेतन चारुचरित्रविचित्रित लोकविबुद्ध ।

[illegible] ॥ ॥

[illegible] जय जय विश्वरत्न ॥ [illegible] ॥

[illegible] प्रारम्भः।

([illegible]न्दगयरह्रनिगग [illegible])

[illegible] आनन्दे

[illegible] मते।

[illegible]।

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]पानभव्रन भुव्रनेशक सज्जनाः
[illegible] सम जना [illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]
[illegible] भवन्ति [illegible] ।
[illegible]
जनयति [illegible]शरणम ॥ [illegible] ॥

[illegible]

अथ श्रीनमिनाथजिनस्तुतिप्रारम्भः ।

(पञ्चचामरं छन्दः)

नमीश निर्मलात्मरूप सत्यरूप शाश्वतं
परार्ध्यसिद्धिसौधमूर्ध्नि सत्स्वभावतः स्थितम् ।
विधाय मानसाब्जकोशदेशमध्यवर्तिनं
स्मरामि सर्वदा भवन्तमेव सर्वदर्शिनम् ॥१॥

प्रफुल्लकौशलाञ्छनप्रभूततेजसोऽद्य ते
दिवाकरस्य वा महेश्वराभिदर्शनेन मे ।
ममादर्वर्धिनी सुदुर्मतिर्निशेव दुर्भगा
गता प्रणाशमाशु हृत्कजे विनिद्रताऽभवत्॥२॥

निरस्तदोषदुष्टकष्टकार्यमर्त्यसंस्तवो
भवे भवे भवत्पदाम्बुजैकसेवकः प्रभो ।
भवेयमीदृशं शुभं मदीयचित्तचिन्तितं
तव प्रसादतो भवत्ववन्ध्यमेव सत्वरम् ॥ ३ ॥

अथ श्रीनेमिजिनस्तुतिप्रारम्भः ।

(उपजातिश्छन्दः)

विशुद्धविज्ञानभृतां वरेण
शिवात्मजेन प्रशमाकरेण ।
येन प्रयासेन विनैव कामं
विजित्य विक्रान्तनरं प्रकामम् ॥ १ ॥

विहाय राज्यं चपलस्वभावं
राजीमतिं राजकुमारिकां च ।
गत्वा सलीलं गिरिनारशैलं
भेजे व्रतं केवलमुक्तियुक्तम् ॥ २ ॥

निःशेषयोगीश्वरमौलिरत्नं
जितेन्द्रियत्वे विहितप्रयत्नम् ।
तमुत्तमानन्दनिधानमेकं
नमामि नेमिं विलसद्विवेकम् ॥ ३ ॥

पायाद्वः श्रुतदेवता निदधती तत्राब्जकान्ती क्रमौ
नालीके सरलालसा समुदिता शुभ्रामरीभासिता ४

इति ऋषभजिनस्तुतिः ।

अथाजितनाथस्तुतिः

तमजितमभिनौमि यो विराज-
द्वनघनमेरुपरागमस्तकान्तम् ।
निजजननमहोत्सवेऽधितष्ठा-
वनघनमेरु परागमस्तकान्तम् ॥ १ ॥
स्तुत जिननिवहं तमर्तितप्ता-
ध्वनदसुरामरवेण वस्तुवन्ति ।
यममरपतयः प्रगाय पार्श्वे-
ध्वनदसुरामरवेणव स्तुवन्ति ॥ २ ॥
प्रविनर वमतिं त्रिलोकयन्त्यां
गम नययोगमनन्तिमं पदं हे ।
जिनमत विततापवर्गवीथी-
गमनयमां गमनानि मेऽपदंहः ॥ ३ ॥

शिवशर्मणे मतं दध-
दममाननयानयानया यतमानम् ॥ ३ ॥
शृङ्खलभृत्कनकनिभा यातामम-
समानमानमानवमहिताम ।
श्रीवज्रशृङ्खलां कजयातामम-
समानमानमानवमहिताम् ॥ ४ ॥

इति संभवजिनस्तुति ।

अथाभिनन्दनजिनस्तुतिः ।

त्वमशुभान्यभिनन्दन नन्दिता-
सुरवधूनयनः परमोदरः ।
स्मरकरीन्द्रविदारणकेसरि-
न्सुरव धूनय नः परमोदरः ॥ १ ॥
जिनवराः प्रयतध्वमितामया
मम तमोहरणाय महारिणः ।
प्रदधतो भुवि विश्वजनीनता-
ममतमोहरणा यमहारिणः ॥ २ ॥

असुमतां मृतिजात्यहिताय यो
जिनवरागमनो भवमायतम् ।
प्रलघुतां नय निर्मथितोद्धता-
जिनवरागमनोभवमाय तम् ॥ ३ ॥
विशिखशङ्खजुषा धनुषास्तस-
त्सुरभिया ततनुन्नमहारिणा ।
परिगतां विशदामिह रोहिणीं
सुरभियाततनुं नम हारिणा ॥ ४ ॥

इत्यभिनन्दनजिनस्तुतिः ।

अथ सुमतिजिनस्तुतिः ।

मदमदनरहित नरहित
सुमते सुमतेन कनकतारतार ।
दम दमपालय पालय
दरादरातिक्षतिक्षपातः पातः ॥ १ ॥
विधुतारा विधुताग:
सदा सदाना जिनाजितातापाः ।

अथ सुविधिजिनस्तुतिः ।

तवाभिवृद्धिं सुविधिर्विधेया-
त्स भासुरङ्गोऽलनतो दयावन् ।
यो योगिपङ्क्त्या प्रणतो नभःस-
त्सभासुरङ्गोऽलनपादयावन् ॥ १ ॥
या जन्तुजाताय हितानि राजी
मारा जिनानामलपद्ममालम् ।
दिश्यान्मुदं पादयुगं दधाना
माराजिनानामलपद्ममालम् ॥ २ ॥
जिनेन्द्र भङ्गैः प्रसभं गभीरा-
शु भारती शस्यनमस्तवेन ।
निनाशयन्ती मम शर्म दिश्याद्
शुभा रतीशस्य तमस्तवेन ॥ ३ ॥
दिश्यात्तवाशु ज्वलनायुधाल्प-
मध्या सिताकं प्रवरालकस्य ।
अस्तेन्दुरास्यस्य रुचोरुपृष्ठ-
मध्यासिताकम्प्रवरालकस्य ॥ ४ ॥

इति सुविधिजिनस्तुतिः ॥

रक्षःक्षुद्रग्रहादिप्रतिहतिशमनी वाहितश्वेतभास्व-
त्सन्नालीकासदा सापरिकरमुदितासाक्षमालांभवन्तम्
शुभ्रा श्रीशान्तिदेवीजगतिजनयतात्कुण्डिकाभाति-
यस्याः सन्नालीका सदासा परिकरमुदिता सां क्षमा-
लाभवन्तम् ॥ ४ ॥

इति वासुपूज्यस्तुतिः ।

अथ विमलजिनस्तुतिः ।

अपापदमलं घनं शमितमानमामो हितं
नतामरसभासुरं विमलमालयामोदितम् ।
अपापदमलंघनं शमितमानमामोहितं
न तामरसभासुरं विमलमालयामोदितम् ॥१॥
सदानवसुराजिता असमरा जिना भीरदाः
क्रियासु रुचितासु ते सकलभा रतीरायताः ।
सदानवसुराजिता असमराजिनाभीरदा
क्रियासुरुचितासु ते सकलभारतीरा यताः॥२॥
सदा यतिगुरोरहो नमत मानवैरञ्चितं
मतं वरदमेनसा रहितमायताभावतः ।

सदायति गुरोरहो न मतमानैर्वरं चितं
मतं वरदमेन सारहितमायता भावतः ॥ ३ ॥
प्रभाजि तनुतामलं परमचापला रोहिणी
सुधावसुरभीमना मयि सभाक्षमालेहितम् ।
प्रभाजितनुतामलं परमचापलारोहिणी
सुधावसुरभीमनामयिसभा् क्षमाले हितम् ॥४॥

इति विमलजिनस्तुतिः ।

अथानन्तजिनस्तुतिः ।

सकलधौतसहासनमेरव-
स्तव दिशन्त्वभिषेकजलप्लवाः ।
मतमनन्तजितः स्नपितोल्लस-
त्सकलधौतसहासनमेरवः ॥ १ ॥
मम रतामरसेवित ते क्षण-
प्रद निहन्तु जिनेन्द्रकदम्बक ।
वरद पादयुगं गतमन्नता-
ममरतामरसे विततेक्षण ॥ २ ॥

सकलकला कलापकलितापमदारु-
णकरमपापदम्॥ २ ॥
भीममहाभवाब्धिभवभीतिविभेदि परास्तविस्फुर-
त्परमतमोहमानमतनूनमलं घनमघवतेऽहितम् ।
जिनपतिमतमपारमर्त्यामरनिर्वृतिशर्मकारणं
परमतमोहमानमतनूनमलङ्घनमघवते हितम् ॥३॥
यात्र विचित्रवर्णविनतात्मजपृष्ठमधिष्ठिता हुता-
त्समतनुभागविकृतधीरसमदवैरिव धामहारिभिः ।
तडिदिव भाति सांध्यघनमूर्धनि चक्रधरास्तुसा मुदे-
ऽसमतनुभा गवि कृतधीरसमदवैरिवधा महा-
रिभिः ॥ ४ ॥

इत्यरनाथजिनस्तुतिः ।

अथ मल्लिनाथजिनस्तुतिः ।

नुदंस्तनुं प्रवितर मल्लिनाथ मे
प्रियङ्कुरोचिररुचिरोचितां वरम् ।
विडम्बयन्वररुचिमण्डलोज्ज्वलः
प्रिये गुरोऽचिररुचिरोचिताम्बरम् ॥ १ ॥

समुदितमानवाधनमलो भवतो भवतः ॥ १ ॥
प्रणमत तं जिनव्रजमपारविसारिरजो
दलकमलानना महिमधाम भयासमरुक् ।
यमतितरां सुरेन्द्रवरयोषिदिलामिलनो-
दलकमला ननाम हिमधामभया समरुक् २
त्वमवनताङ्गिनोत्तमकृतान्त भवाब्धितुषो-
ऽव सदनानुमासंगमन याततमोदयितः ।
शिवसुखसाधकं स्वभिदधत्सुधियां चरणं
वसदनु मानसं गमनयातत मोदयितः ॥ ३ ॥
अधिगतगोधिका कनकरुक्तव गौर्युचिता-
क्षमलकराजि तामरसभास्यतुलोपकृतम् ।
मृगमदपत्रभङ्गतिलकैर्वदनं दधती
कमलकरा जितामरसभास्यतु लोपकृतम् ॥३॥

इति मुनिसुव्रतजिनस्तुतिः ।

अथ नमिनाथजिनस्तुतिः ।

स्फुरद्विद्युत्कान्ते प्रविकिर वितन्वन्ति सततं

अथ नेमिनाथजिनस्तुतिः ।

चिक्षेपोर्जितराजकं रणमुखे यो लक्षसंख्यं क्षणा-
दक्षामं जन भासमानमहसं राजीमतीतापदम् ।
तं नेमिं नम नम्रनिर्वृतिकरं चक्रे यदूनां च यो
दक्षामञ्जनभासमानमहसं राजीमतीतापदम् ॥५॥
प्राव्राजीज्जितराजका रज इव ज्यायोऽपिराज्यंजवा-
द्या संसारमहोदधावपिहिता शास्त्रीविहायोदितम् ।
यस्याः सर्वत एव सा हरतु नो राजी जिनानां भवा-
यामं मारमहोदधावपिहिताशास्त्रीविहायोदितम्६॥
कुर्वाणाणुपदार्थदर्शनवशाद्भास्वत्प्रभापात्रपा-
मानत्या जनकृत्तमोहरत मे शस्तादरिद्रोहिका।
अक्षोभ्या तव भारती जिनपते प्रोन्मादिनांवादिनां
मानत्याजनकृत्तमोहरतमस्त स्तादरिद्रोहिका ॥३॥
हस्तालम्बितचूतलुम्बिलतिकायस्याजनोऽभ्यागम-
द्विश्रामं विनताग्रपादपगतां याचा गिप्राग हव ।
मा भ्रांत विननांतु नोऽर्जुनरुचिःसिंहऽभिरूढाक्षम-

नूता नूतार्थधात्रीह ततहततमःपातकापातकामा।
शास्त्री शास्त्री नराणां हृदयहृदयशोरोधि-
काबाधिका वा-
देया देयान्मुदं ते मनुजमनुजरां
त्याजयन्ती जयन्ती ॥ ३ ॥

याता या तार्क्ष्यजाः सदसि सदसिभृत्काल-
कान्तालकान्ता
पार्श्वं पार्श्वेन्द्रगजं सुरवसुरवधूपूजितारं जितारम्।
मात्रामात्रायमानं त्वामविषमविषभृद्भूषणा भीषणा भी-
हीनाहीनान्यपत्नी कुवलयवलयश्यामदेहामदेहा॥४॥

इति पार्श्वनाथजिनस्तुतिः।

अथ महावीरजिनस्तुतिः।

नमदमरशिरोरुहस्रस्तसामोदनिर्निद्रमन्दार-
मालारजोरञ्जितांह्रि धरित्रीकृतावन वरतम

ॐ नमो विश्वनाथाय जन्मतो ब्रह्मचारिणे ।
कर्मवल्लीवनच्छेदनेमयेऽरिष्टनेमये ॥ ४ ॥

पार्श्वनाथ नमस्तुभ्यं विघ्नविध्वंसकारिणे ।
निर्मलं सुप्रभातं ते परमानन्ददायिनः ॥ १ ॥

अश्वसेनावनीपाल-कुक्षिचूडामणे प्रभो ।
वामासूनो नमस्तुभ्यं-श्रीमत्पार्श्वजिनेश्वर ॥ २ ॥

देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहापापप्रदीपानिलो
देवः सिद्धवधूविशालहृदयालंकारहारोपमः ।
देवोऽष्टादशदोषसिन्धुरघटानिर्भेदपञ्चाननो
भव्यानांविदधातुवाञ्छितफलंश्रीपार्श्वनाथोजिनः १

कल्याणपादपारामं श्रुतगङ्गाहिमाचलम् ।
विश्वत्रयेशितारं तं वन्दे श्रीज्ञातनन्दनम् ॥ १ ॥
पान्तु वः श्रीमहावीर-स्वामिनो देशनागिरः ।
भव्यानामान्तरमल-प्रक्षालनजलोपमाः ॥ २ ॥

अद्य मे सफलं जन्म अद्य मे सफला क्रिया ।
शुद्धाहिनोदये देव जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ १ ॥

दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ।
भामण्डलं दुन्दुभिरातपत्रं
सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥१॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम्॥१॥

मङ्गलं भगवान् वीरो मङ्गलं गौतमः प्रभुः ।
मङ्गलं स्थूलभद्राद्या जैनो धर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥१॥
सर्वारिष्टप्रणाशाय सर्वाभिष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धिनिधानाय गौतमस्वामिने नमः ॥ २ ॥

अनन्तविज्ञानविशुद्धरूपं
निरस्तमोहादिपरस्वरूपम् ।
नरामरेन्द्रैः कृतचारुभक्तिं
नमामि तीर्थेशमनन्तशक्तिम् ॥ १ ॥

प्रणमति नगराजियाँ स्तुतध्वस्तदम्भा
जयति मुदितहृद्यानापमानाममाना ॥ ४ ॥

इति ऋषभस्तुति ॥ १ ॥

अथाजितनाथस्तुतिः ॥ २ ॥

मनामि मनसिजेशं धेहि तीर्थाधिपं स-
न्तमजितमदमोहमाध्वसंगेयशोभम् ।
अगतमनसमेणीदृग्गणेसाम्यशर्म
तमजितमदमोहमाध्वसंगेयशोभम् ॥ १ ॥
नमसि जिनवगणां स्तोमसस्ताभिमान-
स्मरतरसमदम्भं देहिनां भोगतारम् ।
सुकृतवनवितानं वारिवाहं समूहाः
स्मरतरसमदम्भं देहिनां भोगतारम् ॥ २ ॥
निहितनिखिलशस्तं ध्वस्तमद्रोहमोहा
जिनमतमहतारंभेदि नानामयानाम् ।
अनृतदृशि जनौघे तस्थुषां हन्त नित्यं
जिनमतमहतारं भेदि नानामयानाम् ॥ ३ ॥

पशुपगिरिढभावं यन्महावैः मनाथं
कल्यति गतिपाले हृद्यमानन्ददानम् ॥ ३ ॥
स्वमदशमदशं श्रीमावुर्मेवन यचि-
द्वसुहृदिदुरितारधीरमातानवेहे ।
प्रकटितपटुकोपाटो रूपस्वरूपा-
वसुहृदि दुरितार धीरमातानवेहे ॥ ४ ॥
इति ग़भवजिनस्तुति ॥ ३ ॥

अथाभिनन्दनजिनस्तुतिः ॥ ४ ॥

जनयतु कपिकेतो देवमान्नं वगीयः,
शमनतवमुधीभोग्यानिकामानयानाम् ।
जगति दुरधिगम्यां मूर्तिमर्चन्त्यमाया
शमनतवमुधीभोग्यानिकामानयानाम् ॥ १ ॥
विजितकुमतगर्व सर्वविद्वृन्दचक्र-
रकरमहमतिवित्तं ज्ञानतारागधीरम् ।
हृदि मुदितमनरकं त्वां वहे शालिलीला-
करमहमतिवित्तं ज्ञानतारागधीरम् ॥ २ ॥

वचनमतनु येषां हारिणामाम्रपुष्प-
प्रकरजनितभानां विश्वरक्षांशुकानाम् ॥ २ ॥
जिनवचनभवाब्धौ मज्जतामङ्गभाजां
भवजनितरमायं तत्त्वमालम्बनाय ।
दिशसि ग्रहमपास्य प्रार्थनानामचेतो-
भवजनितरमायत्तत्त्वमालम्बनाय ॥ ३ ॥
कुरु शिवमलकौघैः सा महाकालितुन्नां
जनरुचिरमहीनामङ्गनापन्नवेह ।
युवतिनतिषु रूपं ते यशः प्राप गौर्वी-
जनरुचिरमहीनामङ्गनापन्नवेह ॥ ४ ॥

इति सुमतिजिनस्तुतिः ॥ ५ ॥

अथ पद्मप्रभजिनस्तुतिः ॥ ६ ॥

प्रहरतु हरिपीठं ते स्थितं वपुःपद्म-
प्रभममतरसालंकृत्यवित्तातमोहम् ।
यदभजनविभूतिः शालिबालप्रवाल-
प्रभममतरसालं कृत्यवित्तातमोहम् ॥ १ ॥

वाग्देवता हतकुवादिकुलाभवर्णा-
त्सा पातु कुन्दविकसन्मुकुलाभवर्णा ॥ ४ ॥
इति ऋषभस्तुतिः ॥ १ ॥

अथाजितस्तुतिः ॥ २ ॥

कुसुमबाणचमूभिरपीडित-
स्त्रिभिरपीव जगद्भिरपीडितः ।
शमयताद्वृजिनानि जिनाजितः
सकललोकमवन्नजिनाजितः ॥ १ ॥
कृतवतोऽसुमतां शरणान्वयं
सकलतीर्थकृतां चरणान्वयम् ।
सुरकृताम्बुजगर्भनिशान्तकान्
रविसमान प्रणुमोऽवनिशान्तकान् ॥ २ ॥
कृतसमस्तजगच्छुभवस्तुना
जितकुवादिगणास्तभवस्तुना ।
अवतु वः परिपूर्णनभारती-
र्नृमरुतो ददती जिनभारती ॥ ३ ॥

सुफणरत्नसरीसृपराजितां
रिपुबलप्रहतावपराजिताम् ।
स्मरत तां धरणाग्रिमयोपितां
जिनगृहेषु यथा श्रमयोपिताम् ॥ ४ ॥

अथ शंभवस्तुतिः ।

नमो भुवनशेखरं दधति देवि तं वन्दिता-
मिति स्तुतिपरागमत्रिदशपावलीर्वन्दिता ।
यदीयजननी प्रतिप्रणुत तं जिनेशं भवं
निहन्तु मनसः सदानुपमवैभवं शंभवम् ॥ १ ॥
सुमेरुगिरिमूर्धनि ध्वनदनेकदिव्यानके
सुरैः कृतमवेक्ष्य यं मुमुदिरेऽति भव्या न के ।
जगत्त्रितयपावनो जिनवराभिषेको मलं
सदा स विधुनोतु नोऽशुभमयं घनाकोमलम् ॥२॥
अपेतनिधनं धनं बुधजनस्य शान्तापदं
प्रमाणनयसंकुलं भृशमसदृशां तापदम् ।

जना जिनवरागमं भजत तं महासंपदं
यदीप्सथ सुखात्मकं विगतकामहासं पदम् ॥ ३ ॥
शराक्षधनुशङ्खन्निजयशोबलक्षामता–
समस्तजगतां कृताहितमहाबलक्षामता ।
विनीतजनताविपद्विपसमृद्ध्यभिद्रोहिणी
समस्तु सुरभी स्थिता रिपुमहीध्रभिद्रोहिणी ॥४॥

इति शंभवस्तुतिः ॥ ३ ॥

अथाभिनन्दनस्तुतिः ॥ ४ ॥

अभयीकृतभीतिमज्जनः
सुरपकृतातुल्भूतिमज्जनः ।
इह भव्यमनोऽभिनन्दनः
शिवदः सोऽस्तु जिनोऽभिनन्दनः ॥ १ ॥
रक्षन्त्यचरं त्रसं च ये
कृतचरणाः शतपत्रमंचयं ।
अपवर्गापायशोधना–
स्ते वः पान्तु जिना यशोधनाः ॥ २ ॥

व्याप्ताखिलविष्टपत्रया
पदचम्पा नयपुष्टपत्रया ।
या मुनिभिरभाजि नोदिता
सा वागस्तु मुदे जिनोदिता ॥ ३ ॥
तन्वाब्जमहादलाभया
सह शक्त्यातुलमोदलाभया ।
मम भवतु महाशिखण्डिकां
प्रज्ञप्ती रिपुराशिखण्डिका ॥ ४ ॥

इत्यभिनन्दनस्तुतिः ॥ ४ ॥

अथ पार्श्वजिनस्तुतिः ।

शमदमोत्तमवस्तुमहापणं
सकलकेवलनिर्मलसद्गुणम् ।
नगरजेसलमेरविभूषणं
भजत पार्श्वजिनं गतदूषणम् ॥ १ ॥
सुरनरेश्वरनम्रपदाम्बुजाः
स्मरमहीरुहभञ्जमतंगजाः ॥

सकलतीर्थकराः सुखकारका
इह जयन्तु जगज्जननारकाः ॥ २ ॥
श्रयति यः सुकृती जिनशासनं
विपुलमङ्गलकेलिविभासनम् ।
प्रबलपुण्यरसोदयधारिका
फलति तस्य मनोरथमालिका ॥ ३ ॥
विकटसंकटकोटिविनाशिनी
जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ।
नरनरेश्वरकिंनरसेविता
जयतु सा जिनशासनदेवता ॥ ४ ॥

इति पार्श्वजिनस्तुतिः ।

अथ पार्श्वजिनस्तुतिः ।

श्रीसर्वज्ञं ज्योतीरूपं विश्वाधीशं देवेन्द्रं,
काम्याकारं लीलागारं साध्वाचारं श्रीतारम् ।
ज्ञानोदारं विद्यासारं कीर्तिस्फारं श्रीकारं,
गीर्वाणैर्वन्द्यं सानन्दं भक्त्या वन्दे श्रीपार्श्वम् ॥१॥

जाग्रद्वीपे जम्बूद्वीपे स्वर्णे शैले श्रीशैले,
चञ्चच्चक्रे ज्योतिश्चक्रे तुङ्गत्वाढ्ये वैताढ्ये ।
श्रेयस्कारे वक्षस्कारे देवावासे सोल्लासे,
ये वर्तन्ते सार्वाऽधीशास्ते सौख्यं वो देयासुः ॥२॥
सम्यग्ज्ञानं शुद्धध्यानं श्रुत्वा ध्यानं सन्मानं,
त्रैलोक्यश्रीरामारम्यं विद्वद्रम्यं प्रागम्यम् ।
अर्हद्वक्त्राम्भोजोद्भूतं शश्वत्पूतं संगीतं,
लक्ष्मीकान्तं वर्णोपेतं वन्दे व्यक्तं सिद्धान्तम् ॥३॥
भव्यानां भक्तानां कल्याणं कुर्वाणा बिभ्राणा,
शीर्षे शौण्डीरं कोटीरं तारं हारं वक्षोजे ।
विख्याता भोगीन्द्रोपेता सालंकारा प्रह्लादं,
यच्छन्ती सा पद्मा देवी सद्बुद्धिं वृद्धिं वैदुष्यम् ॥४॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ।

अथ पार्श्वजिनस्तुतिः ।

दर्पनतासुरनिर्जरलोकं
तालतमालदलावलिरोकम् ।

देवविनिर्मितचञ्चदशोकं
पार्श्वजिनं विनुवामि विशोकम् ॥ १ ॥
प्राप्तमहापुरुषावलिरेखं
लक्षणलक्षितपत्करेखम् ।
दान्तचलेन्द्रियसैन्यबलेखं
नौमि जिनौघमहं नतलेखम् ॥ २ ॥
सूक्ष्मपदार्थविचारसुचङ्गं
नष्टसुदृष्टिकुदृष्टिभुजङ्गम् ।
मोहमहीरुहभङ्गमतङ्गं
जैनमतं नमत स्फुरदङ्गम् ॥ ३ ॥
रक्षितचारुचतुर्विधसंघः
संश्रयमाणमहासुरसंघः ।
नन्दतु देवपतिर्दिनदाव-
स्तीर्थपमज्जनशम्लानिदावः ॥ ४ ॥

इति पार्श्वजिनस्तुतिः ।

अथ वीरजिनस्तुतिः ।

यदङ्घ्रिनमनादेव देहिनः सन्ति संस्थिताः ।
तस्मै नमोऽस्तु वीराय सर्वविघ्नविघातिने ॥१॥
सुरपतिनतचरणयुगा-
न्नाभेयजिनादिजिनपतीन्नौमि ।
यद्वचनपालनपरा
जलाञ्जलिं ददति दुःखेभ्यः ॥ २ ॥
वदन्ति वन्दारुगणाग्रतो जिनाः
सदर्थतो यद्रचयन्ति सूत्रतः ।
गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे
तदङ्गिनामस्तु मतं विमुक्तये ॥ ३ ॥
प्रोक्तः सुरासुरवरैरिह देवताभिः
सर्वज्ञशासनसुखाय समुद्यताभिः ।
श्रीवर्धमान इह निर्वृतिमीहमानो
भव्याङ्गनानवतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥

इति वीरजिनस्तुतिः ।

अथ वीरजिनस्तुतिः ।

वीरं देवं नित्यं वन्दे, जैनाः पादा युष्मान्पान्तु ।
जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै, सिद्धो देवो दद्यात्सौख्यम् १

इति वीरजिनस्तुतिः ।

अथ दीपमालिकास्तुतिः ।

पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यङ्कपर्यासनः,
क्ष्मापालप्रमुहस्तिपालविपुलश्रीशुल्कशालामनो-
रामे कार्तिकदर्शनागकरणे तुर्यारकान्ते शुभे,
स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरं
जिनम् ॥ १ ॥

यद्गर्भागमनोद्भवव्रतनवज्ञानाप्तिभद्रक्षणे,
संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत्क्षणात् ।
श्रीमन्नाभिभवादिवीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः,
संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसि च ॥२॥
अर्थात्पूर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्धमानाभिधः,
तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सूत्रतः ।

अथ नेमिजिनस्तवनम् ।

इन्द्रोपेन्द्रौ प्रनन्त्वा, जिनेन्द्रमथ नेमिनम् ।
प्रारभाने स्तोतुमेव, गिरा भक्तिपवित्रया ॥ १ ॥
नमस्तुभ्यं जगन्नाथ, विश्वविश्वोपकारिणे ।
आजन्मब्रह्मनिष्ठाय, दयार्धगाय नायिने ॥ २ ॥
स्वामिन घातीनि कर्माणि, स्वानि घातिनवानसि ।
शुक्लध्यानेन दिवसै–श्चतुःपचाशतापि हि ॥ ३ ॥
न केवलं यदुकुलं, त्वया नाथ विभूषितम् ।
इदं जगत्त्रयमपि, केवलालोकभास्वता ॥ ४ ॥
अस्ताघो यस्तथा स्वामि–न्नपारश्च भवाम्बुधिः ।
गुल्फगोपदमात्रं स, स्यात्त्वत्पादप्रसादतः ॥ ५ ॥

इति नेमिजिनस्तवनम् ।

अथ मुनिसुन्दरसूरिकृतं स्तवनम् ।

जयश्रियां धाम सुधामधारिन्,
सुत्रामदामार्चित देवदेव ।

जिनेन्द्र तस्मै भवते सदा जग-
त्पितामहाय प्रभुतात्मने नमः ॥ ५ ॥
स्तुतिमिति तनुते जिनेन्द्र यस्ते,
मवयमहामुनिसुन्दरस्तुतां हे ।
स भवति गुणसंपदा समस्ते,
फलमिति तदराचिरान्ममापि ॥ ६ ॥
इति मुनिसुन्दरसूरिकृतं स्तवनम् ।

अथ जिनप्रभसूरिकृतं चतुर्विंशति- जिननामगर्भितं मङ्गलाष्टकम् ।

नतमुनीन्द्र जिनेन्द्र युगादिमा-
जिन जिताखिलकर्ममहारिपो ।
अभवसंभव शंभवनाथ मे,
प्रणतकल्पतरो कुरु मङ्गलम् ॥ १ ॥
स्वमभिनन्दन नन्दननन्दन,
धुवगतेः सुमते सुमते सदा ।

अर जिनेश सुंरशमुतान्वहं,
कलमगलगते कुरु मङ्गलम् ॥ ६ ॥
कमतिमल्लिमुमल्लिविभो भृशं,
सुमुनिसुव्रत सुव्रत सुव्रत ।
नदनमनदमनदम नमे,
प्रहतपापनमे कुरु मङ्गलम् ॥ ७ ॥
शिवनिवास शिवाङ्गसमुद्भव,
प्रबलपार्श्वकपार्श्वक पार्श्वक ।
भवदवानलनीर सुवीर हे,
कृतमुरेन्द्रनते कुरु मङ्गलम् ॥ ८ ॥
इति जिनप्रभसूरिनता जिना,
विमलकेवललोकितभूतलाः ।
सकलसंसृतिसागरपारदा,
ददति पूज्यतमा मम मङ्गलम् ॥ ९ ॥
इति चतुर्विंशतिजिननामगर्भित मङ्गलाष्टकम् ।

॥ अर्हम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि
दुष्कर्मवारणविदारणपंचवक्रम् ।
यत्पादपद्मयुगलं प्रणमन्ति शक्राः
स्तोष्ये मुदा जिनवरं जिनत्रैशलेयम् ॥ १ ॥
क्षीणाष्टकर्मनिकरस्य नमोस्तु नित्यं
भीताभयप्रदमनिन्दितमंत्रिपद्मम् ।
इष्टार्थमण्डलसुमर्जनदेववृक्षं
नित्योदयं दलिततीव्रकषायमुक्तम् ॥ २ ॥
जैनागमं दिशतु सर्वसुखैकदारं
श्रीनन्दनक्षितिजहव्यहतिप्रकारम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु-
वोहित्थमत्रिभमभीष्टदमाशु मुग्धम् ॥ ३ ॥
मातङ्गयक्षरमलं प्रकरोति सेवां
पूर्वान्तमारममभीप्सितदं विशालम् ।
उत्पत्तिविस्तरनदीशपतज्जनानां
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ ४ ॥

इति श्रीवीरजिनस्तुतयः ॥ [illegible] ॥